मनोज
कॉमिक्स
संख्या 1029 मूल्य 7.00
पाइला
राम-रहीम

लेखक : महेन्द्र - भरत. चित्रांकन : दिलीप कदम, उमेश कानडे.

अंतिम बार जी भरकर सांस ले लो लड़को। कुछ ही पलों में तुम्हारे फेफड़े तुम्हारे शरीर से जुदा कर दिये जायेंगे। और यह कार्य करेगा मेरा प्यारा सेवक 'पाइला'

उफ! हमारे फेफड़े चोरी करने पर तुल गया है यह शैतान। क्या हम पाइला से अपने फेफड़ों की रक्षा कर पायेंगे?

क्या फेफड़े भी चुराए जा सकते हैं? यदि हां, तो किसे आवश्यकता है फेफड़ों की? क्या रहस्य छुपा है फेफड़ों की चोरी के पीछे? पढ़कर देखिए यह सनसनीखेज कथानक।

राजनगर! जहां हर पल कहीं न कहीं कुछ न कुछ घटित होता रहता है।

कब यह अनोखी सी आकृति गली के अन्दर से एकाएक बाहर निकली, जान न पाया कोई।

इतनी फुर्ती थी इस अनोखी आकृ
में कि शिकार होने वाला व्यक्ति
अपनी मौत को जी भरकर देख भी न
पाया था कि...

...मौत एक धुएं के गोले के रूप में उस पर टूट चुकी थी।
पाइला अपना अभियान इस व्यक्ति से शुरू करेगा।

हल्की सी चीख आयी।
जो दबकर रह गई वाहनों के शोर में।
आऽऽऽ
पींऽऽऽ ईंऽऽऽ
पींऽऽऽ ईंऽऽऽ

मात्र चंद सेकण्डों तक चलने वाले इस
अजीबोगरीब हत्याकांड पर पर्दा
गिराकर वापस अंधेरी गली में भाग ग
गई वह अनोखी आकृति।
हा...हा...हा...! मैं सफल हो गया। वह बहुत खुश होगा मेरी सफलता पर। यही तो चाहता था वह।
...कौन था वह?

राजनगर सिटी हॉस्पिटल!
कुछ पता लगा डा. पाण्डे इसकी मौत कैसे हुई?

डा. पाण्डे की आंखों में मंडरा रहा था गजब का आश्चर्य।
यह मेरे जीवन का सबसे अनोखा व अजीब केस है इंस्पेक्टर। मैं तो अब भी विश्वास नहीं कर पा रहा कि ऐसा भी हो सकता है।
आखिर ऐसा हुआ क्या है डा. पाण्डे?

जो कुछ बताया डा. पाण्डे ने वह इं. प्रभाकर के छक्के छुड़ा देने के लिए काफी था।
नो! नेवर! इम्पॉसिबल! ऐसा कभी हो ही नहीं सकता। यह तो वही बात हुई, जैसे कोई कहे कि कुतुबमीनार की निचली मंजिल कोई चुरा ले गया। बाकी मंजिलें अपनी जगह हवा में टिकी हुई हैं।
किन्तु सच्चाई तो सच्चाई होती है। लेकिन सच्चाई थी क्या?

रात के अंधेरे में राजनगर की सड़कों पर शरीफों की जगह निकलते हैं चोर-उचक्के, नशेड़ी, शराबी।
मुझको यारो माफ करना, मैंने बिल्कुल नहीं पी है... हिच्च..
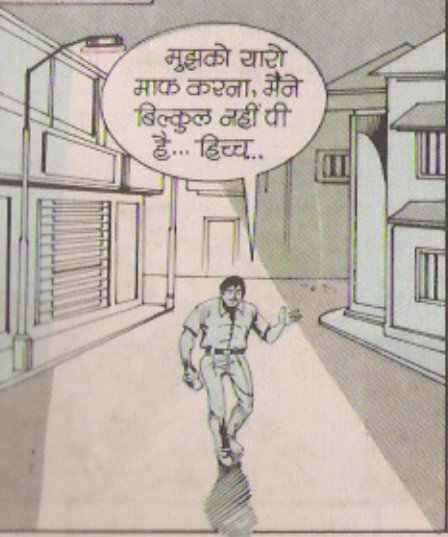
या फिर वे निकलते हैं, जिनके इरादे बड़े खतरनाक होते हैं।
अब यही बनेगा मेरा शिकार!

पाहला के शरीर से निकला धुएं का गोला...
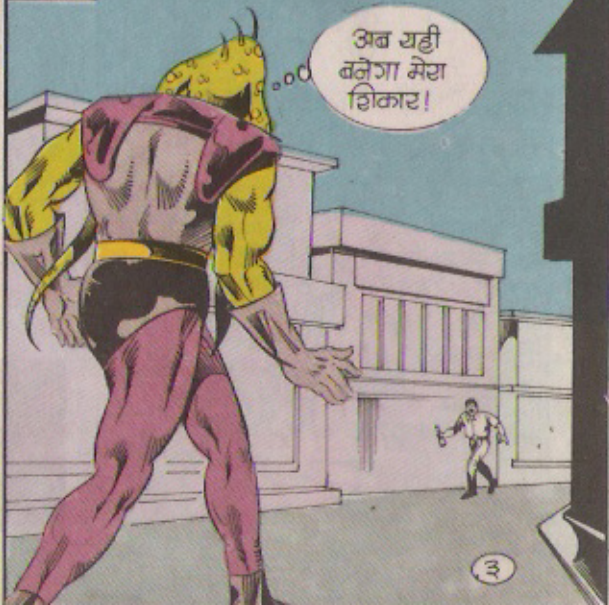
... जा टकराया शराबी से।
पुनः एक हल्की सी चीख उभरी।
आSSS
शराबी के शरीर से निकला कुछ...

... जिसे कैच करके भागता चला गया पाहला।
हा...हा...हा...! धीरे-धीरे मेरा अभियान गति पकड़ रहा है। यही तो चाहिए था मुझे।

उछल पड़ा इं. प्रभाकर! मानो बिच्छू ने डंक मारा हो उसे।
व्हाट! क्या कह रहे हो? एक और लाश? फौरन सिटी हॉस्पिटल पहुंचाओ उसे।
यस सर!

सिटी हॉस्पिटल में मची हुई थी जबर्दस्त सनसनी!
यह भी उसी रहस्यमय व्यक्ति का शिकार हुआ है इंस्पेक्टर!

हवाइयां उड़ रही थीं इं. प्रभाकर के चेहरे पर।
एक ही रात में दो लाशें! ये लाशें चीख-चीखकर किसी भयानक तबाही का संकेत दे रही हैं।
क्या थी वह भयानक तबाही?

राजनगर का सुभाष पार्क! जहां शुरू होने जा रही थी बैलून प्रतियोगिता!
अब मैं भारत के खेलमंत्री श्री दामोदर राय जी से निवेदन करूंगा कि वे इंटरनेशनल बैलून टूर्नामेंट का अपने हाथों से बैलून उड़ाकर उद्घाटन करें।
आइये सर! इस टोकरी में बैठिए।
अवश्य!
खेलमंत्री और उनके सेक्रेट्री के टोकरी में बैठने के साथ ही आसमान की ऊंचाइयों में उठता चला गया वह विशाल बैलून।
आहा! आसमान में सैर करने का भी अपना ही आनंद है!
और आसमान से नीचे टपकने का भी अलग ही आनंद है!
चिहुंक पड़े खेलमंत्री।
क..कौन बोला यह? कौन बोला?
म... मैं भी नहीं जानता सर!
इसी पल गुब्बारे को फोड़ कर बाहर निकला वह!
हा... हा... हा...! मैं बोला था। किल्लौरा... हां, किल्लौरा नाम है मेरा।
मारे दहशत के टोकरी से नीचे कूद पड़ा सेक्रेट्री।
किल्लौरा मुझे मार डालेगा! बचाओsss
पर क्या जानता था बेवकूफ कि उसे नीचे भी मौत ही मिलनी थी।

किल्लौरा के शिकंजे में फंसी मछली की तरह तड़प उठे खेलमंत्री।
दामोदर राव, तुम एक गुण्डे थे और गुण्डे ही रहे। नेता बनने के बाद भी तुमने अपनी काली करतूतें बंद नहीं की। इसलिए मुझे तुम्हारी सांसें रोकने के लिए भेजा गया है, ताकि यह देश अमन-चैन की सांस ले सके।
रो पड़े खेलमंत्री जी–
ब-ह-ह-ह! मुझे छोड़ दो! मैं चार बार चुनाव हारने के बाद पहली बार संसद में पहुंचा हूं। यदि मैं मर गया तो इस देश की युवा खेल पीढ़ी का क्या होगा। बचाओऽऽऽ
भला किल्लौरा पर खेलमंत्री की बातों का क्या प्रभाव पड़ता।
यहां तुझे कोई फरिश्ता भी बचाने नहीं आयेगा कमीने।
गलत कहा तूने किल्लौरा! बचाने वाला आ गया है।
साथ में तेरी मौत का वारंट भी लाया हूं।
किल्लौरा मौत से नहीं डरता राम-रहीम! मुझे भारत माता को इस शैतान के जुल्मों से आजाद करवाना है और यह कार्य अपनी जान पर खेल कर भी पूरा करूंगा मैं।
आऽचऽऽऽ
बड़ा ढीठ है तू किल्लौरा। बेकार में रहीम दी ग्रेट से भिड़ने की सोच रहा है।
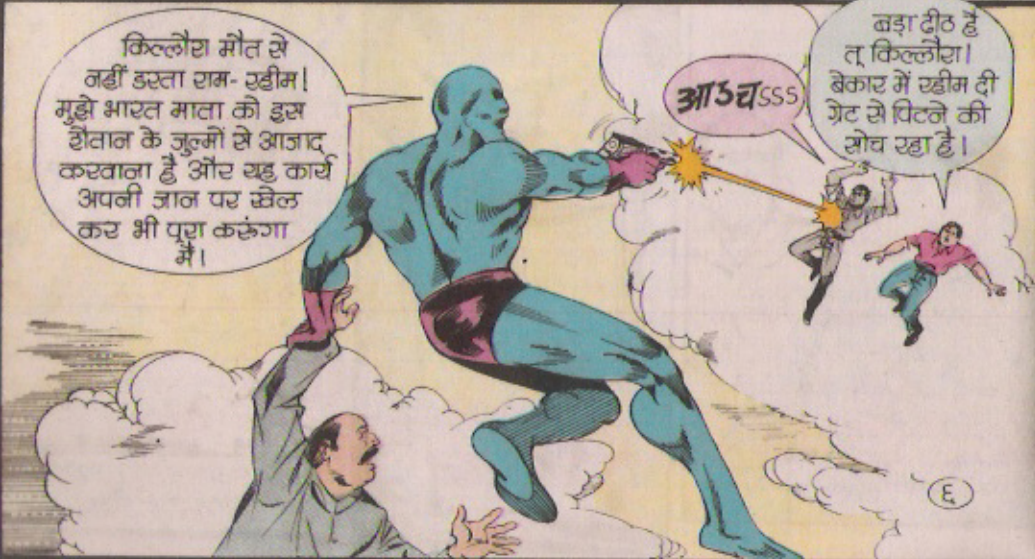
पलटकर राम ने किया घातक प्रहार
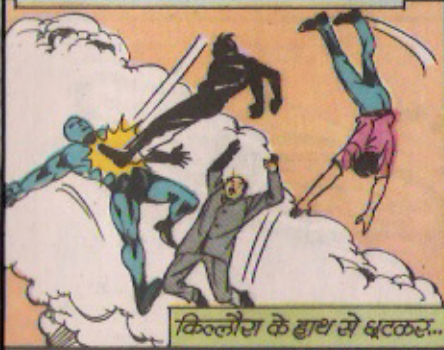
किल्लौरा के हाथ से छूटकर...

...तेजी से नीचे गिरते चले गये खेलमंत्री।

बूहू...हू...हू..! भला कौन बचायेगा मुझे। इस देश की जनता का बहुत खून चूसा है मैंने।

आईsss बचाओsss

हवा में कलाबाजी खाता चला गया राम।

किन्तु किल्लौरा भी बस किल्लौरा ही था।

मेरी टेप गन से कब तक बचेगा चूज़े।
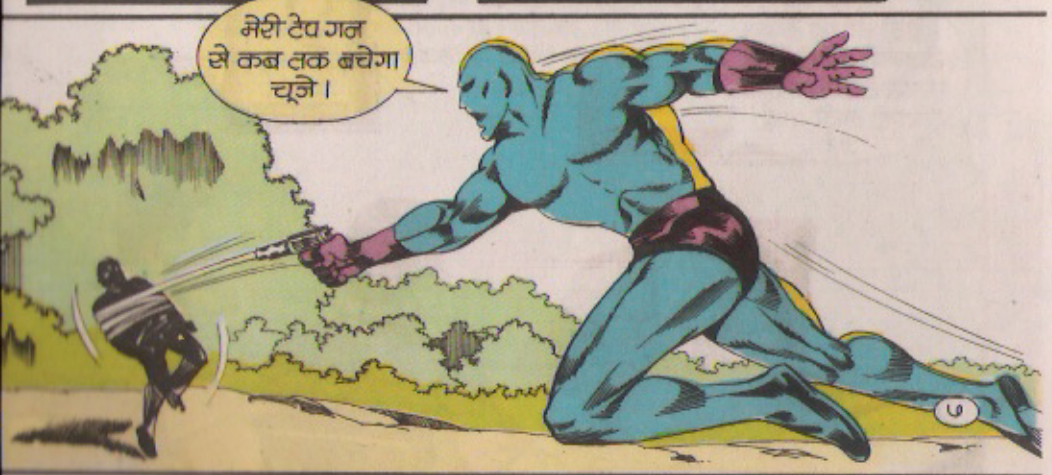
टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर गया था किल्लौरा का जिस्म।

कुछ समय पश्चात कमिश्नर देशपाण्डे के कक्ष में-

समस्या गंभीर होती जा रही है राम। खेलमंत्री की हत्या के प्रयास के अलावा कल रात दो लाशें पाई गईं...

...डॉक्टर के अनुसार उन दोनों ही लाशों के जिस्म से फेफड़े गायब हैं।
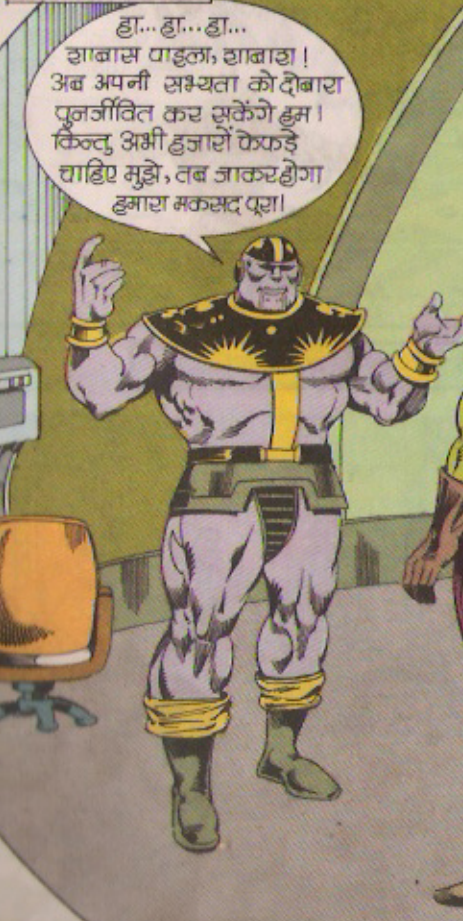
क्याSSS

हां सर! आश्चर्य की बात तो यह है कि उन लाशों के शरीर पर खरोंच का एक निशान तक नहीं है।
ओह नो! यह कैसे हो सकता है! बिना शरीर चीरे किसी के फेफड़े कैसे निकाले जा सकते हैं।
आखिर किसी शख्स की फेफड़ों में क्या दिलचस्पी हो सकती है? क्या सचमुच उनके फेफड़े किसी शख्स ने चुराए होंगे?
कहां छुपा होगा वह फेफड़ाचोर?
यहां है फेफड़ाचोर!
हा...हा...हा... शाबास पाइला, शाबाश! अब अपनी सभ्यता को दोबारा पुनर्जीवित कर सकेंगे हम! किन्तु, अभी हजारों फेफड़े चाहिए मुझे, तब जाकर होगा हमारा मकसद पूरा।
आप निश्चिंत रहिए फेफड़ाचोर! चुप नहीं बैठूंगा मैं। अपनी सभ्यता को बचाने के लिए हजारों क्या लाखों फेफड़े चुरा लायेगा 'पाइला'। यहां मानवों की कोई कमी नहीं है।

और तभी पिच की धरती फाड़ता हुआ प्रकट हुआ पाइला।

भड़ाक

हा... हा... हा... पाइला आया... पाइला आया!

तेजी से मैदान के चारों ओर राउण्ड लगाता चला गया पाइला।

न जाने कितनी चीखें हलक से निकलीं —

अपना कार्य पूरा कर आंधी-तूफान सा दौड़ता चला गया पाइला!
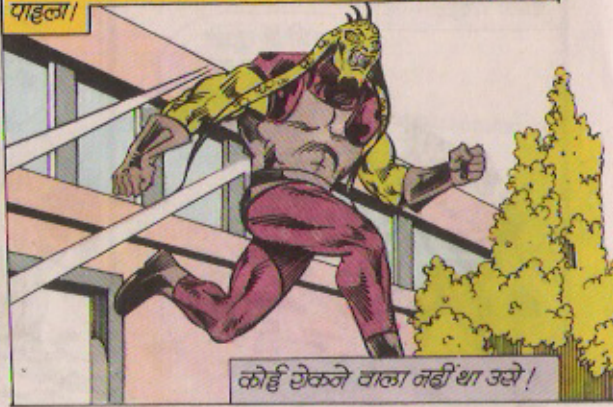
कोई रोकने वाला नहीं था उसे!

ज... जरा ठहरिये। शायद 'था'!

आश्चर्यजनक ढंग से लहराकर बचा था पाइला।

पाइला के सीने ने उगला धुआं —

किन्तु, राम के लिये तब भारी पड़ गया था यह आइडिया...

...जब तेजी से स्विमिंग पूल में बढ़ता चला आया पाइला—
पानी में छुपने से तेरी जान नहीं बचने वाली लड़के!

बड़ा ही करिश्माई था राम का प्रदर्शन—
जब तक रहीम मदद लेकर नहीं आता, मुझे किसी भी तरह इसके घातक प्रहारों से बचना होगा!

इसी पल आकाश में गूंज पड़ी विमान की गड़गड़ाहट!
मैं आ गया हूं। पाइला का पूरा इन्तजाम करके आया हूं मैं। इस शिकंजे से नहीं बच पायेगा वह!

इससे पहले की वह शिकंजा पाइला को जकड़ पाता...
...परखच्चे उड़ गये उसके
पाइला को कोई नहीं पकड़ सकता! कोई नहीं!
भड़ाम

इन दोनों शैतानों से मुकाबला आसान नहीं रहेगा। भागना होगा।

पल-प्रतिपल दूर होते पाइला की पीठ से आ चिपका कुश।
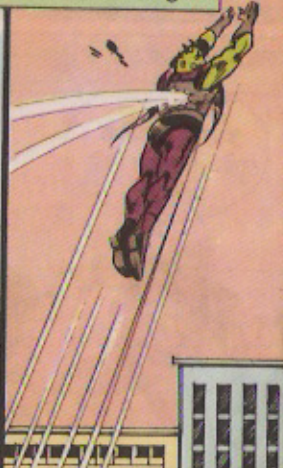
जिसे फेंका था राम ने।
अब तू चाहे पाताल में भी छुप जा चाइला! राम तुझे वहां से भी खोद निकालेगा।
क्या मैं उसका पीछा करूं रहीम?
रहने दो। वह अब हमारे हाथ नहीं आयेगा। प्लेन वापस ले चलो।

समूचा राजनगर जैसे सड़क पर आ गया था आज।
केकड़ा चोर को गिरफ्तार करो!
हमारे केकड़ों की रक्षा करो!
पुलिस प्रशासन हाय...हाय!
उत्तेजित जनता ने घेर लिया था राजनगर पुलिस हैडक्वार्टर-
चाइला पीड़ित संघ जिन्दाबाद!
हमारे केकड़ों की रक्षा करो!

कमिश्नर देशपाण्डे के आश्वासन पर वापस लौट पड़े सभी लोग।
कैसा जमाना आ गया। पहले तो हमारी जेबें ही असुरक्षित थीं। लेकिन अब तो हमारे केकड़े भी सुरक्षित नहीं रहे!
नम ब्यूटी पार्लर
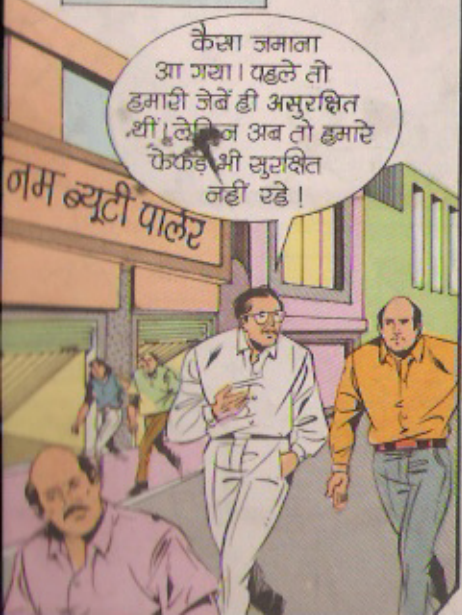
इतनी जोर से घूंसा मारा कमिश्नर देशपाण्डे ने कि मेज पर रखी हर वस्तु झनझना उठी।
डैम इट! अब तक साठ लोगों के केकड़े चुरा चुका है वह। और हम सिवाय जनता को आश्वासन देने के अलावा कुछ नहीं कर पा रहे।
हमें चाइला के खिलाफ एक छापामार युद्ध लड़ना होगा...

...क्योंकि मेरा विचार है पाइला अकेला नहीं है। उसके पीछे कोई अन्य शक्ति भी कार्य कर रही है।
यू आर राइट! हर कदम पर सतर्क रहना होगा तुम्हें।
कुछ ही पलों बाद तूफान से बातें कर रही थी राम-रहीम की मोटर-बाइक।
पाइला की पीठ पर चिपकी Spy Spider से सिग्नल मिलने आरम्भ हो गये हैं। कुछ ही समय में पाइला को खोज निकालूंगा मैं।
राजनगर के शिवाजी ऑडिटोरियम में चल रही थी परमाणु ऊर्जा आयोग की बैठक। जिसे सम्बोधित कर रहे थे परमाणु उर्जा मंत्री श्री एटम प्रसाद जी।
आज हमारे देश को बाहरी ताकतों से बहुत खतरा है। इसलिये हमारे राष्ट्र को अपनी रक्षा के लिये...
खतरा देश को बाहर से नहीं, बल्कि तुम जैसे सफेद-पोश शैतानों से अधिक है एटम प्रसाद!
हर किसी की निगाह मानो चिपक कर रह गई वहां, जहां से दीवार फोड़कर अन्दर आई लेडी किलर-
हां, लेडी किलर है मेरा नाम। तेरे काले कारनामों के ताबूत में अन्तिम कील ठोकने आई हूं मैं एटम प्रसाद!
बचाओऽऽऽ मैं मरना नहीं चाहता। मेरी उम्र ही क्या है अभी। केवल पचपन वर्ष का हूं मैं!
इससे पहले कि एटम प्रसाद के सुरक्षा गार्ड हरकत में आते, अपनी जकड़ में लेती चली गई वह सुनहरी किरण उन्हें!
माफ करना साथियो, तुम लोग इस भ्रष्ट नेता को बचा नहीं सकोगे।
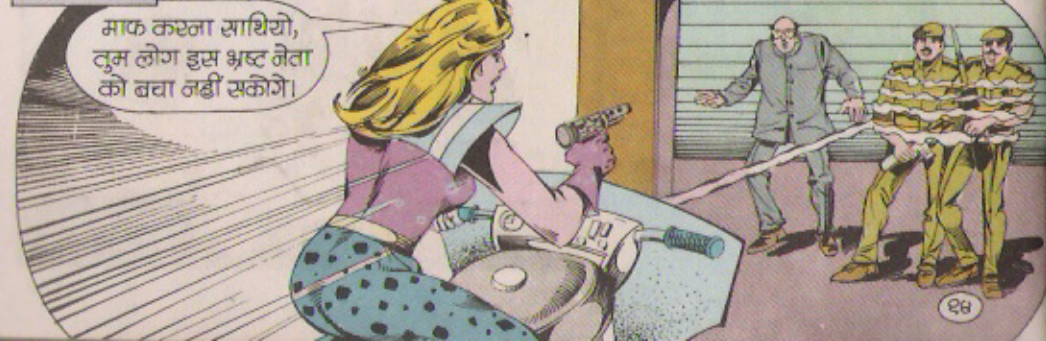
अगले पल मौत बनकर हवा में लहराई लेडी किलर।

अपने गुनाहों का हिसाब देने के लिए तैयार हो जा एटम प्रसाद

नहींSSS

लेडी किलर के हथियार से निकली लेसर बूम रिंग ने..

ज़ूंSSS

ज़ूंSSS
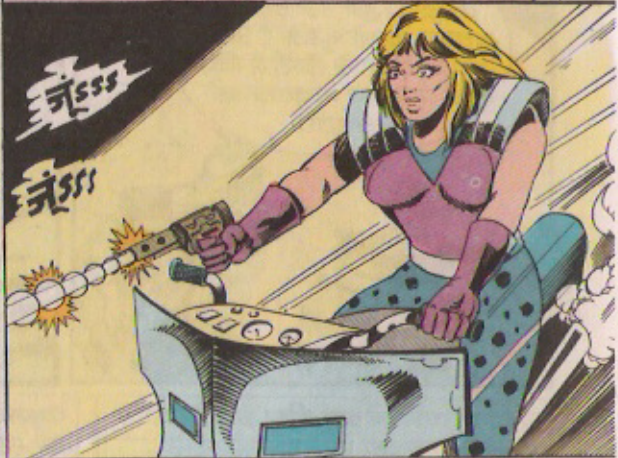
... टुकड़े-टुकड़े करके रख दिए एटम प्रसाद के।

आSSS

ऑडिटोरियम में छाये कब्रिस्तान-से सन्नाटे को तोड़ा उसकी शेरनी-सी गुर्राहट ने-

सुनो ! अगर इस देश को बचाना चाहते हो, तो एटम प्रसाद जैसे सफेदपोश नेताओं को पहले खत्म करो।
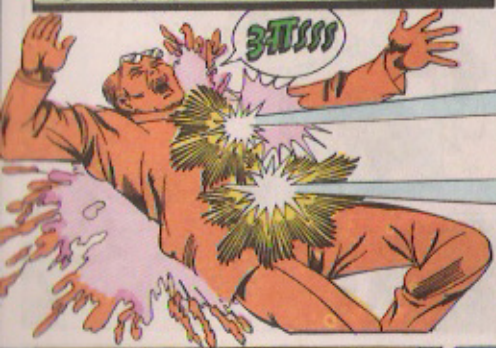
हॉल की टूटी दीवार से निकलकर न जाने कहां चली गई लेडी किलर।

गुस्से से दहाड़ रहा था फेफड़ाचोर-

फिर की ना बेवकूफी की बात। हमें उन लड़कों से बचकर फेफड़े चुराने हैं अब। क्योंकि मैं अपने कार्य में किसी भी प्रकार का व्यवधान नहीं चाहता।
ओ. के. बॉस!
कुछ ही पलों में पानी को चीर कर समुद्री किनारे की ओर बढ़ रहा था पाइला।
हा... हा... हा... और फेफड़े चुराने हैं मुझे अभी। पाइला आया... पाइला आया!
समुद्र के पानी को कई मीटर ऊपर उछालता बाहर निकला वह।
पाइला को राजनगर की तरफ बढ़ते देख रहे थे राम-रहीम
SPy spider ने हमें मंजिल तक पहुंचा दिया। समुद्र से आता है यह शैतान।
पाइला के पीछे लपक पड़े दोनों जांबाज।
पाइला के हाथों एक भी निर्दोष की हत्या न होने पाये रहीम।
फेफड़े तो क्या एक चवन्नी तक न चुरा सकेगा अब यह शैतान।
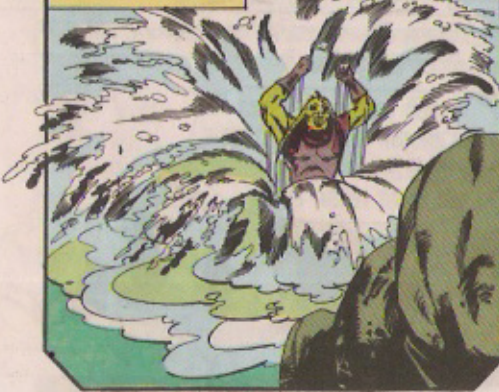
अपना पीछा होता देख चौंक पड़ा था पाइला।
ओह! वह लड़के मेरा पीछा कर रहे हैं! बॉस ने कहा था कि मैं इनसे बचकर रहूं!

और इन लड़कों से पिंड छुड़ाने का अब यही एक तरीका है।
धड़ाक

ठिठक कर रुक गये राम-रहीम-
अरे! कहां गया पाइला? एकाएक हमारी आंखों से ओझल कैसे हो गया वह?
वो देखो राम!

ओह! सड़क के बीचोबीच गड्ढा! यह तो कोई लम्बी सुरंग लगती है। नई बनी सुरंग।
इसी सुरंग को खोदता हुआ भागा है पाइला, जल्दी करो।

तेजी से सुरंग में लहराते चले गये राम-रहीम-

राजनगर के मध्य स्थित गैलेक्सी पेट्रोल पंप के सामने की सड़क यूं फट पड़ी...
...मानो कोई मुर्दा कब्र फाड़ कर जागा हो।
पाइला!
हा... हा... हा... पाइला आया... पाइला आया!
पाइला!

भगदड़ मच गई वहां!
हे भगवान! मेरे केकड़े चोरी होने से बचा ले। मैं आज के बाद कभी इन्कम टैक्स की चोरी नहीं करूंगा।
इसी पल सुरंग से बाहर निकले राम-रहीम-
बस पाइला, बस! बहुत हो चुका तेरा खूनी खेल!
अब केकड़े तो क्या, चवन्नी भी न चुरा सकेगा तू!
पाइला पर राम का घातक प्रहार-
बोल कमीने, क्यों करता है तू केकड़ों की चोरी?
बॉस ने कहा था इनसे केवल बचकर रहूं।
इस लड़ाई में किसी का ध्यान नहीं गया था उस मौत की तरफ, जो धीरे-धीरे बढ़कर तालाब का रूप धारण कर रही थी।
इधर पाइला के फौलादी घूंसे की चोट खाकर राम सीधा जा गिरा पेट्रोल के बने उस तालाब में।
छपाक
पाइला भी किसी बाज की तरह झपटा था राम पर –
एक-दूसरे से गुत्थमगुत्था हुए पेट्रोल में नहा गये थे दोनों-
आह! मेरी आंखों में जलन हो रही है। पेट्रोल बंद करो रहीम।
१८
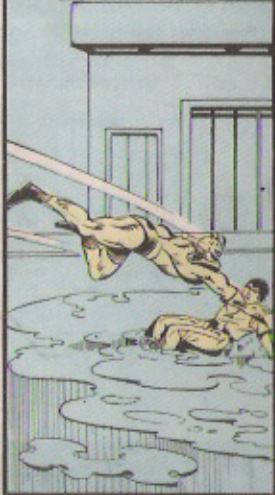
या खुदा! मेरे दोस्त को कुछ हो गया ना तो तेरी चौखट पर सिर टकरा-टकरा दम तोड़ देगा रहीम।
किसी अनजान आशंका से कांप उठा रहीम।

इधर राम ने अपनी संपूर्ण ताकत लगा कर पाइला को पेट्रोल के तालाब से बाहर उछाल डाला।

पाइला के सूखी जमीन से टकराते ही छूटी चिंगारियां! नतीजा–
धू...धू...
धधकने लगा वह!

बॉस ने कहा था तुझसे बचकर रहूं। किन्तु अब तुझे दुनिया की कोई ताकत पाइला के हाथों मरने से नहीं बचा सकती।
धू...धू...धू

पाइला के हाथों से छूटी अग्नि किरणें पेट्रोल के तालाब पर दौड़ती चली गईं।
नहींऽऽऽ
पेट्रोल से भीगे राम को अब भला भभकने से कौन रोक सकता था

अगले पल ज्वालामुखी-सा फट पड़ा पेट्रोल-कुण्ड–
बड़ाम

झनझना उठा वातावरण रहीम की चीख से।
राम!
न जाने कितने टुकड़ों में बंटा होगा राम?

क्रोध की अधिकता से जलती रहीम की आंखें जम गईं आग की लपटों में घिरे पाइला पर।
नहीं पाइला! म... मैं तुझे जिन्दा नहीं जाने दूंगा।
पाइला के पीछे ही लपका था रहीम भी।
तेरी मौत बनकर आ रहा हूँ रहीम!
यह हैं राजनगर के जाने-माने उद्योगपति और लेबर मिनिस्टर श्री जीवनदास।
मेरे प्यारे दोस्तो! हमारे देश की आर्थिक बुनियाद मजबूत करने के लिये हमें मजदूरों का शोषण रोकना होगा।
जब तक तुझ जैसी दीमक इस देश में मौजूद है, तब तक इस देश की बुनियाद कभी मजबूत नहीं हो सकती जीवनदास!
कौन?
कौन?
लोगों के दिमाग में घुमड़ते प्रश्न चिन्हों पर विराम लगाया उसने, जिसका नाम है-
लेडी किलर...
लेडी किलर...
हां जीवनदास! तुझ जैसे शैतानों को खत्म करने की सौगन्ध खाई है मैंने!
मौत सामने देख जड़ हो गया जीवनदास।
म... मुझे मत मारो! मैं अपनी सारी फैक्टरियां मजदूरों के नाम कर दूंगा बूऽ हूऽहूऽऽऽ

किन्तु लेडीकिलर तो मानो उसे मारने की सौगन्ध खाकर आई थी।
लेडीकिलर की गन से निकली लेसर बूम रिंग ने न जाने कितने हिस्सों में बांट डाला था जीवनदास को।
बूम
बूमsss
बूमsss
खचाक
जीवनदास को मौत दे वापस लौट गई लेडी किलर—
दो खत्म हुए। अब नम्बर है दामोदर राय का। अभी मेरा प्रतिशोध पूरा नहीं हुआ!
इधर पाइला के पीछे लगा हुआ था रहीम।
कहीं भी भाग ले पाइला, रहीम पाताल तक तेरा पीछा नहीं छोड़ेगा।
पाइला के पीछे-पीछे समुद्र में छलांग लगा चुका था रहीम—
तेजी से समुद्र के पानी को चीरता आगे बढ़ता चला गया पाइला।
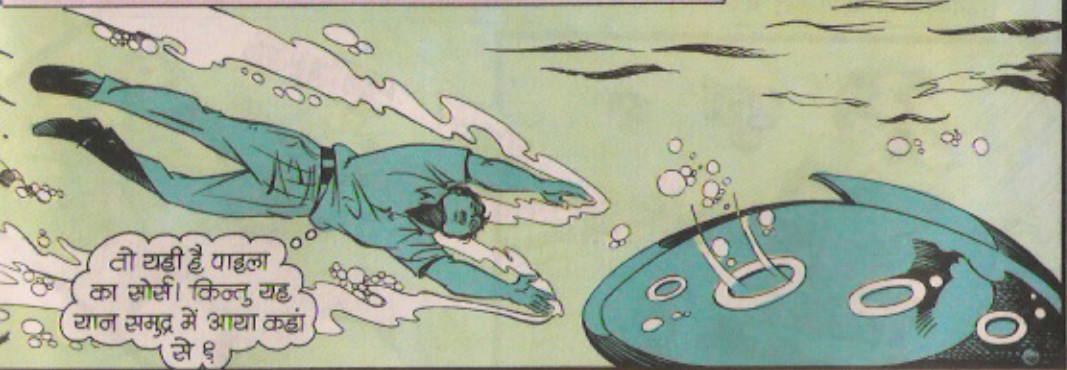
कुछ ही पलों में समुद्र में खड़े इस अनोखे यान में प्रवेश कर गया था पाइला।
तो यही है, पाइला का सोरी। किन्तु यह यान समुद्र में आया कहां से ?
जैसे ही यान में प्रवेश किया रहीम ने, मानो बिजली-सी चमकी।
आSSS
इस अनोखे पिंजरे में कैद होकर रह गया था रहीम।
हा... हा... हा... फेफड़ा चोर तक पहुंच कर अपनी मौत बुला ली है तूने!
राजनगर पुलिस हैडक्वार्टर—
क... क्या मैं सचमुच जिन्दा बच गया अंकल!
POLICE HEADQUARTER
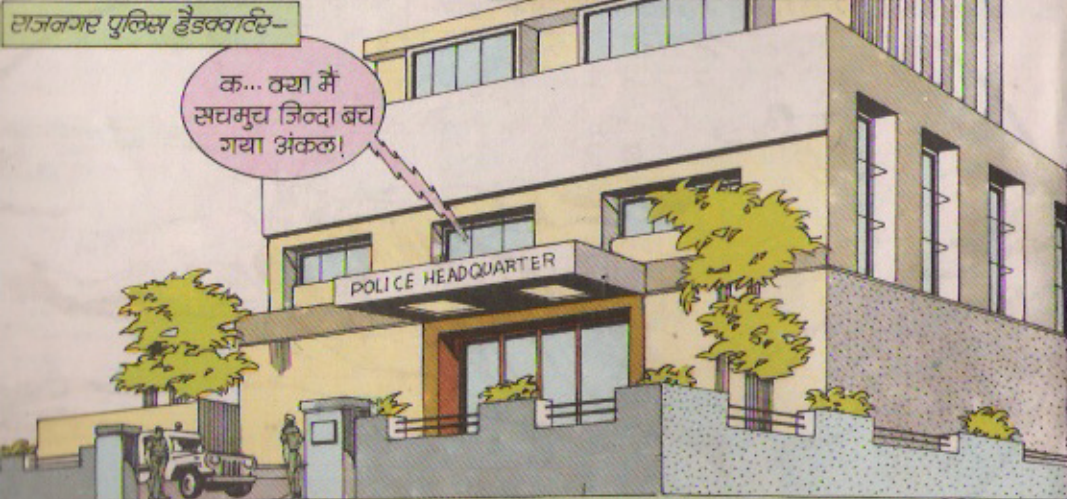
हां राम! यदि सैकण्ड के हजारवें हिस्से में वह अज्ञात मददगार तुम्हें पेट्रोलपम्प से न उठाता तो पेट्रोलपम्प के साथ-साथ तुम्हारे भी परखच्चे उड़ जाते।

झटके से उठ खड़ा हुआ राम-

प...पाइला का क्या हुआ? रहीम कहां है?

पाइला आग की लपटों में घिरने के बावजूद भागने में कामयाब हो गया। रहीम भी उसी के पीछे था।
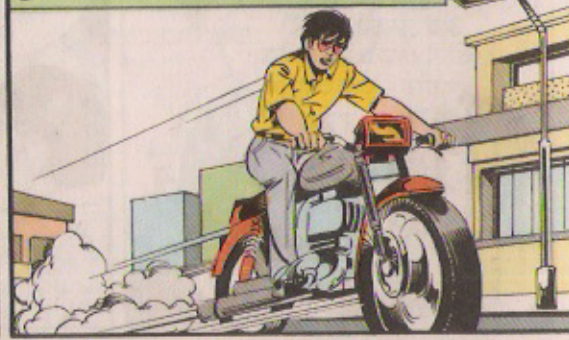
राम से थोड़े ही फासले पर था अज्ञात मददगार।

श्वेता परछाई की तरह तुम्हारे पीछे लगी हुई है राम भइया!

इधर ठहाके लगा रहा था फेफड़ाचोर-

हा... हा... हा... अब तेरा दोस्त कभी नहीं आयेगा लड़के। वह मर चुका है।

इसी पल भूत की तरह प्रकट हुआ राम।
मौत भी हमें जुदा नहीं कर सकती कमीने!
आहा राम!

फेफड़ाचोर के हाथों से चमकी बिजली।

कड़...कड़...कड़
शेर की गुफा में आ गया है तू लड़के!

रहीम की भांति इस अनोखे पिंजरे में कैद होकर रह गया था राम भी!
हा...हा...हा... अब तुम्हारे फेफड़े चोरी करके रहेगा मेरा प्यारा सेवक पाइला!

ल...लेकिन तुम कौन हो फेफड़ा-चोर? और क्यों चुरा रहे हो हमारे फेफड़े?
क्योंकि तुम मानवों के फेफड़े ही हमारी सभ्यता को पुन: जीवित कर सकते हैं।

कैसी सभ्यता?
पाइला ग्रह के वासी हैं हम। हमारा विज्ञान तुम्हारे ग्रह से कई हजार वर्ष आगे है...

...किन्तु पिछले दिनों कुछ घातक जीवों ने हमारे ग्रह पर धावा बोल दिया। वह सीधा हमारे फेफड़ों को चबा डालते थे...
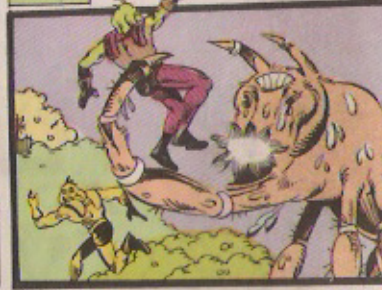
... शीघ्र ही वह दिन भी आ गया जब हमारे वैज्ञानिकों ने फेफड़ाखोरों की काट ढूंढ निकाली...

मुबारक हो महाराज! हम लोगों ने फेफड़ाखोरों को नष्ट करने वाला कैमिकल तैयार कर लिया है। अब पाइला ग्रह उन फेफड़ाखोरों से हमेशा के लिये मुक्त हो जायेगा।

...फिर शुरू हुआ पाइला ग्रह की सेना का फेफड़ाखोर उन्मूलन अभियान...
इनके जिस्मों में भर दूंगा यह कैमिकल। इन कमीनों ने मेरी मां व बहन के फेफड़े भी खा डाले।
...युद्ध स्तर पर कई दिनों तक चला यह फेफड़ाखोर उन्मूलन अभियान...
...कुछ दिनों पश्चात...
हमारे वैज्ञानिकों व सेना की अथक मेहनत से हमने फेफड़ाखोरों का नामो-निशान मिटा दिया। किन्तु हमारे हजारों पाइलावासी बिना फेफड़ों के मृत हुए पड़े हैं...
...यदि उन्हें फेफड़े वापस मिल जायें तो वह पुनः जीवित हो सकते हैं। पर हमें फेफड़े मिलेंगे कहां से?
सर! मैंने पता लगाया है पूरे ब्रह्माण्ड में सिर्फ पृथ्वी नामक ऐसा ग्रह है, जहां पाई जाने वाली मानव जाति के अंग बिल्कुल हमारे समान हैं।
वण्डरफुल! पृथ्वी ग्रह से फेफड़े लाने का कार्य करेगा हमारे ग्रह का सबसे शक्तिशाली व्यक्ति, जिसे आज से फेफड़ाचोर की उपाधि दी जाती है।
सहायक के तौर पर एक पाइला भी इसके साथ होगा।
यस सर!
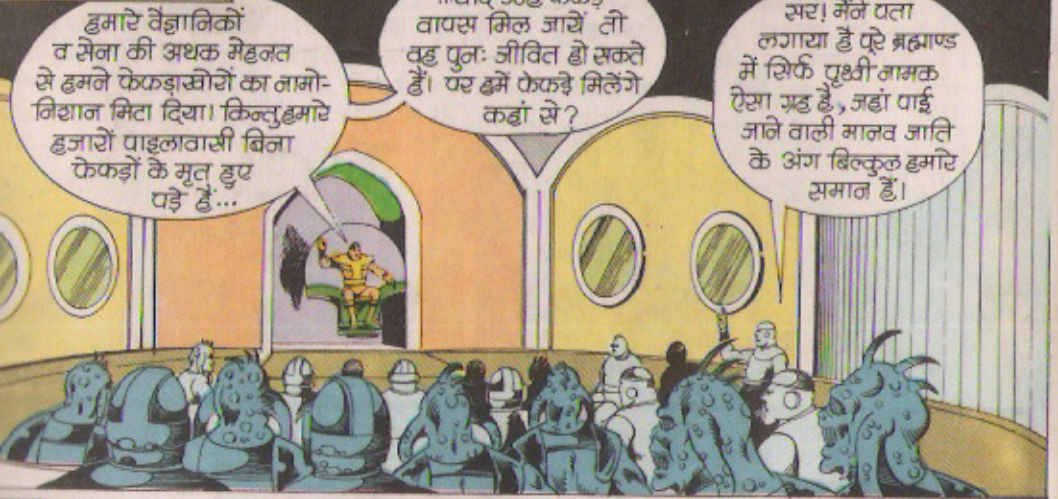
..और इस प्रकार मैं चल पड़ा पृथ्वी ग्रह की ओर, क्योंकि फेफड़ाखोरों का शिकार हुए पाइलावासियों को पुनर्जीवित करने के लिये मुझे हजारों फेफड़ों की आवश्यकता थी। और वे मुझे सिर्फ और सिर्फ पृथ्वी ग्रह पर ही मिल सकते थे।

जूंsss

हा...हा...हा... और अब तुम्हारे फेफड़े चुराकर इस अभियान को आगे बढ़ाऊंगा मैं!

तुम्हारे इरादे कभी कामयाब नहीं होंगे फेफड़ाचोर!

रहीम का कम्प्यूटराइज्ड हाथ जा टकराया स्विचबोर्ड से-

खट
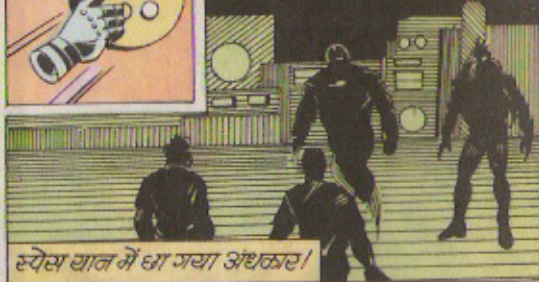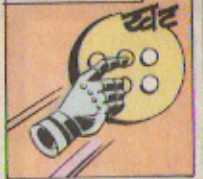
स्पेस यान में छा गया अंधकार!

अचानक हुए आक्रमण से संभल न पाया फेफड़ाचोर!

अपने स्वार्थ के लिए तूने कितने जीवन मौत के मुंह में धकेल दिए कमीने!

इधर रहीम टूट पड़ा पाइला पर!

इसी पल गूंज पड़ी एक रहस्यमयी आवाज-

भागो राम-रहीम! यह यान नष्ट होने वाला है।

यह तो उसी अज्ञात मददगार की आवाज है।

किरणों का फव्वारा-सा छूटा था जैसे यान में।

ओह! किसने फेंकी यह किरणें! भाग पाइला!

इसी पल एक भूकम्प-सा आया था मानो सागर में।

धड़ाम

परखच्चे उड़ गये थे यान के।

समुद्र तट पर एक ज्वार-सा आया, जो अपने साथ बहा लाया था...
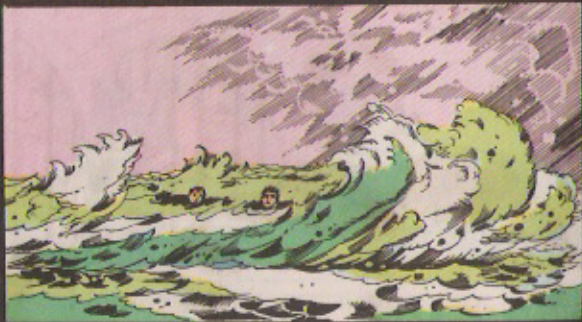
...जिंदा राम-रहीम।

इसी पल सागर तट की रेत को चीरता चला आया केकड़ाचोर।

फेफड़ाचोर का शक्तिशाली प्रहार–

मेरे सारे सपनों पर पानी फेर दिया तुमने लड़को!

पाइला की मौत का कर्ज तुम्हें अपने फेफड़े देकर चुकाना होगा अब। तुम्हारे कंकाल पाइला ग्रह की सबसेऊंची इमारत पर लटकाये जायेंगे।
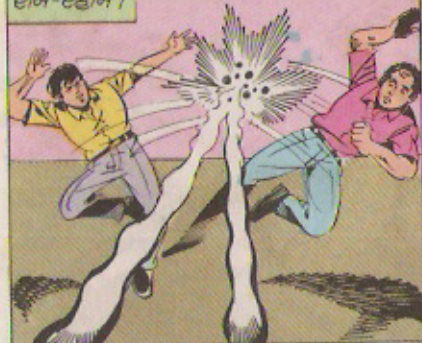
हवा मे ही लपक ली राम ने लेसर बूम रिंग गन –
अब नहीं बचेगा तू फेफड़ाचोर।
लेसर बूम रिंग गन से निकली ढेर सारी बूम रिंग धंसती चली गईं फेफड़ाचोर के जिस्म में।
जूंऽऽऽ जूंऽऽऽ
शैतान लड़को! आखिर मार डाला ना मुझे!
न जाने कितने टुकड़ों में बंटा था फेफड़ाचोर–
इधर लेडी किलर ने नष्ट कर दिये सभी स्मोक बबल्स –
अपना कार्य पूरा कर तूफान की गति से वापस लौट पड़ी लेडीकिलर–
मेरा कार्य पूरा हुआ। अब मुझे मिलना है मैडम इण्डिया से!
राम भइया कौन थी यह लेडीकिलर? कहां से आई थी यह?
मैं दावे के साथ कह सकता हूं, हमारी अज्ञात मददगार यही है।
३०
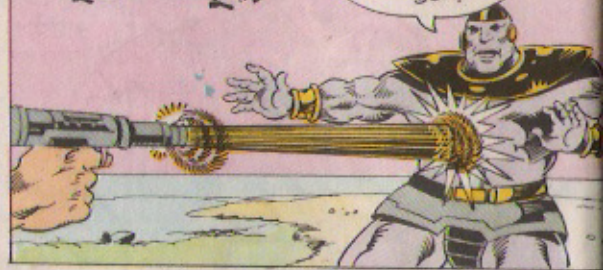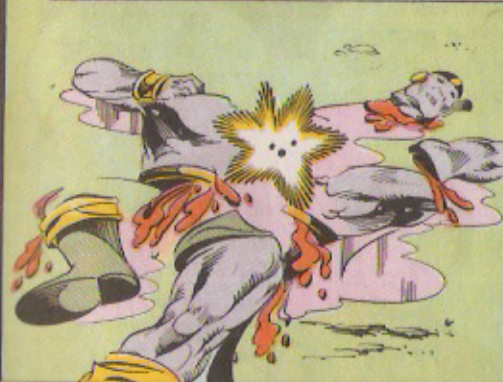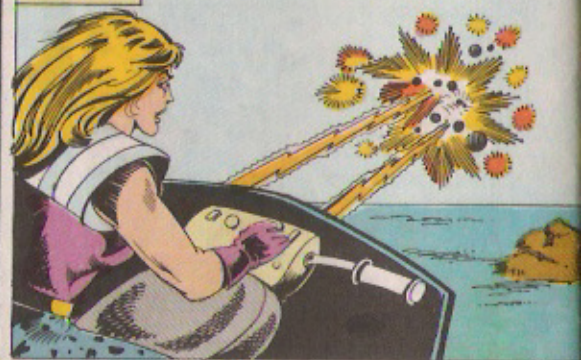
किन्तु दामोदर राय अभी जीवित है मैडम इण्डिया!

हमारा मकसद भी अभी जिन्दा है। जब तक जोंक की तरह देश का खून चूसने वालों को जड़ समेत खत्म न कर देंगे, चैन से नहीं बैठेंगे हम!

दोस्तो! मेरा अगला कॉमिक्स होगा एक जबर्दस्त विशेषांक, जिसे बहुत मेहनत से लिख रहा हूं मैं। उसका नाम होगा 'मैडम इण्डिया' यानी 64 पृष्ठों का ऐसा जल-जला, जिसमें समाया है भावनाओं व देशभक्ति का अनोखा तूफान! पढ़ना न भूलें! भरत-महेन्द्र, 5/17 बी, रूपनगर दिल्ली-7